इकाइ - 3

नीति - शतकम्

सन्दर्भ →

सुक्तक काव्य परम्परा में नीतिशतक का नाम एक उज्ज्वल नक्षत्र के समान संस्कृत साहित्याकाश को सदीयों से प्रकाशित कर रहा है महाराजा भर्तृहरि विरचित शतक त्रय में नीतिशतकम् एक मनोहारी रचना है। इसकी रचना लगभग 7 वीं शताब्दी में हुई। इस शतक में लोकव्यवहार हेतु उपयोगी नीति का उपदेश दिया गया है जैसे मूर्ख निन्दा, विद्वत प्रशंसा, विद्या प्रशंसा, धन की महत्ता, दुर्जन निन्दा, परोपकार प्रशंसा आदि - आदि विषयों को अत्यन्त सरल एवं सरस श्लोकों के माध्यम से लोक को शिक्षित करने का श्लाघनीय प्रयास किया

दिक्कालाद्यनवच्छिन्नानन्त ----तेजसे

प्रसंग -> काव्य की निर्विघ्न समाप्ति की अभिलाषा के लिए कवि प्रारम्भ में मंगलाचरण के माध्यम से इष्ट देव की स्तुति करते हैं। मंगलाचरण के अनुसार प्रस्तुत श्लोक में भर्तृहरि ने परम ब्रह्म को नमस्कार किया है

व्याख्या -> जो परमात्मा दिशाओं और काल की सीमा से बँधा हुआ नहीं है, जो अनन्त चैतन्य स्वरूप है तथा जो केवल अपने अनुभव के द्वारा ही जाना जा सकता है ऐसे उस शान्त चैतन्यस्वरूप परमब्रह्म को नमस्कार है।

विशेष -> (1) 'नमः' के प्रयोग के कारण यहाँ परमात्मा के विशेषणों में चतुर्थी विभक्ति का प्रयोग हुआ है।
(2) प्रस्तुत श्लोक में अनुष्टुप छन्द है।

वि

बोद्धारो - - - - - - सुभाषितम् "

प्रसंग → इस श्लोक में कवि समाज की दुरवस्था का वर्णन कर रहा है जब समाज के लोग लोकहितैषी कवि की शिक्षा प्रद या अच्छे वचन नहीं सुनना चाहते है। इसलिए कवि ने तीन वर्गों का उदाहरण दिया है -

व्याख्या → कवि कहता है कि विद्वान लोग जो है वह एक-दूसरे से ईर्ष्या करने में लगे हुए है। धनी वर्ग जो है वह घमण्ड से चूर है, और जो सामान्य लोग है वह अज्ञानता से पीड़ित है ऐसी स्थिति में कवि के जो उपदेश वचन है वह उसके मुख मे पड़े पड़े ही जीर्ण या समाप्त हो रहे है।

विशेष → (1) इसमे अनुष्टुप छन्द है।
(2) बोद्धार := बुध + तृच्
प्रथमा बहुवचन
का रूप है।
[illegible] । नपुंसलिंग [illegible]

(16)

हर्तुर्याति – – – – – – – – स्पर्धते ॥

-> इस पद्य में भौतिक धन की तुलना में विद्या धन का महत्व अधिक बताया है।

-> जो विद्या रूपी धन चोरों को दृष्टि में नहीं आता है, जो सदैव मनुष्य के सुख में वृद्धि करता है, जो विद्यार्थियों को देने पर भी बढ़ता जाता है, जो युग परिवर्तित होने पर भी नष्ट नहीं होता है वह विद्या रूपी धन जिन विद्वानों के पास है हे राजाओं। आप उनके सामने अपना मद अभिमान छोड़ दो। ऐसे विद्वानों के साथ कौन स्पर्धा कर सकता है।

-> (1) इस पद्य में शार्दूलविक्रीडित छन्द है।

(2) हर्तुः = हृ + तृच्।

(3) अर्थिभ्यः :- अर्थ + इनि।

(4) वृद्धिम् = वृध + क्तिन्।

(5) "तैः सह स्पर्धते", यहाँ 'सह' के योग में तैः पद में तृतीया विभक्ति का प्रयोग किया

(3) ...

(4) देहिनाम्न = देह + इनि ।

(22)

दाक्षिण्यं _ _ _ _ _ _ _ लोकस्थिति॥

प्रसंग -> इस पद्य में कवि लोक व्यवहार में सफलता पाने के लिए आवश्यक गुणों का वर्णन करता है -

व्याख्या -> हमें बन्धुजनों के साथ उदार व्यवहार करना चाहिए। सबको पर दया रखनी चाहिए। दुष्ट व्यक्तियो के साथ धूर्तता से व्यवहार करना चाहिए। उनके साथ नम्र व सरल व्यवहार उचित नहीं होता है। सज्जनो के साथ स्नेह रूपी व्यवहार तथा राजाओ के साथ नीति - पूर्वक व्यवहार करना चाहिए। विद्वान व्यक्तियो के साथ सरल एवं नम्र व्यवहार करना चाहिए। शत्रुओं के सामने शौर्य

Scanned with CamScanner

प्रदर्शित करना चाहिए। गुरुओं के सामने सहनशीलता अपनानी चाहिए। स्त्रीयों के साथ एक निश्चित दूरी बनाकर सम्मान का व्यवहार करना चाहिए। ये सभी व्यावहारिक गुण है। जो मनुष्य इस प्रकार के व्यवहार में कुशल होता है उन्ही पर यह संसार टिका हुआ है।

विशेष- (1) इस पद्य में भी शार्दूल विक्रीडित छन्द है

(2) दाक्षिण्यम् = दक्षिण + ष्यञ्।
(3) शौर्यम् = शूर + ष्यञ्।
(4) स्थिति : = स्था + क्तिन्।
(5) धृष्टता = धृष्ट + तल्।
(6) आर्जवम् = ऋजु + अण्।

(23)

जाड्यं - - - - - - - करोति पुंसाम्

प्रसंग→ इस पद्य में भर्तृहरि सत्संगति का महत्त्व बताते हुए कहते है कि -

व्याख्या→ संत्सगति मनुष्य की बुद्दि की मूर्खता को दूर करती है। सत्संगति ... वादिता लाती है।

अच्छे लोगो की संगति से मनुष्य की उन्नति होती है तथा प्रतिष्ठा बढ़ती है। सत्संगति मनुष्य के पापो का विनाश करती है। सत्संगति से हृदय में प्रसन्नता का भाव आता है। सद्गुणों के विकास से मनुष्य यश को प्राप्त करता है। अतः हे मनुष्य! तुम ही बताओ कि सत्संगति किस प्रकार तुम्हारा भला नही करती है?

प्र → (1) इस पद्य मे वसन्ततिलका छन्द है।

(2) अनेक गुणो के समुच्चय के वर्णन से यहाँ समुच्चयालंकार है।

Scanned with CamScanner

(36)

वरं प्राणोच्छेद ------- पत्युरुचितः

प्रसंग -> यहाँ पर हिमालय के पुत्र मैनाक के उदाहरण द्वारा अपने परिवार-जनों को संकट में छोड़कर केवल अपने प्राण की रक्षा करने वाले कायर पुरुष की निन्दा करता हुआ कवि कहता है -

व्याख्या -> अपने माता-पिता आदि पूज्यजनों को संकट में छोड़कर केवल प्राण बचाने की चेष्टा करना तुच्छता का द्योतक होता है। ऐसी स्वार्थ भावना अनुचित होती है। जिस प्रकार हिमालय के पुत्र मैनाक ने उठती हुई तेज आग में जल जाता तो वह उचित था, इन्द्र के द्वारा वज्र के प्रहार से प्राण छोड़ देता तो वह उचित था किन्तु पिता को संकट में छोड़कर आत्मरक्षा के लिए समुद्र के जल में छुप जाना उचित नहीं था। क्योंकि मनस्वी लोग आत्म-रक्षा की चिन्ता न करके पहले अपने परिवार को बचाने का प्रयास करना चाहिए।

Scanned with CamScanner

विशेष -> (1) इस पद्य में शिखरिणी छन्द है। उसका लक्षण है-
'रसैः रुद्रैश्छिन्ना यमनसभलागः शिखरिणी।'

(2) प्राणोच्छेद = प्राणानाम् उच्छेद इति प्राणोच्छेदः (तत्पुरुष)

(3) समद - मघव - मुक्त - कुलिश = समदश्चासौ मघवान् इति समदमघवान्, तेन मुक्ताः कुलिश प्रहाराः, समद - मघव - मुक्त - कुलिशप्रहारैः (कर्मधारय एवं तत्पुरुष)

Scanned with CamScanner

(51)

रे रे चातक! .... पीनं वचः॥

प्रसंग → चातक पक्षी का उदाहरण से निर्धन व्यक्ति की याचना को सही नहीं ठहराया गया है इसीलिए कवि कहता है कि-

व्याख्या → अरे मित्र चातक! तुम मेरी बात सावधान मन से सुनो कि आकाश में तो बहुत से बादल होते हैं किन्तु सभी बादल वर्षा से पृथ्वी को भिगोने वाले नहीं होते हैं कुछ बादल तो केवल गरजने वाले होते हैं इसलिए तुम्हें हर बादल के समक्ष स्वयं के लिए वर्षा की याचना नहीं करनी चाहिए। उसी प्रकार हे निर्धन व्यक्ति! तुम्हें भी हर मनुष्य के सामने अपनी निर्धनता की याचना नहीं चाहिए क्योंकि कुछ मनुष्य ही होते हैं जो तुम्हारी निर्धनता को समझते हैं बाकी सभी मनुष्य तो तुम्हारी हंसी उड़ाने व उसका फायदा उठाते हैं इसीलिए तुम्हें भी मनुष्य को पहचान कर याचना करनी चाहिए।

विशेष → (1) यहाँ पर शार्दूलविक्रीडित छन्द है।

(2) यहाँ पर अप्रस्तुतप्रशंसा अलंकार है।

(3) सावधानमनसा = अवधानेन सहित सावधं नम्र, सावधानं मनः तेन (कर्मधारय)

Scanned with CamScanner

पद्माकरं दिनकरो ---- विहिताभियोगाः

प्रसंग → इस पद्य में सज्जनों की परोपकार में स्वाभाविक प्रवृत्ति का वर्णन करता हुआ कवि कहता है।

व्याख्या → सज्जनों की परोपकार में सहज प्रवृत्ति को सूर्य, चन्द्र और मेघ के उदाहरणों से स्पष्ट करता हुआ कवि कहता है कि जिस प्रकार सूर्य बिना प्रार्थना के ही कमलवन को पुष्पित करता है। जिस प्रकार चन्द्रमा बिना याचना के कुमुद समूह को विकसित कर देता है बादल भी बिना याचना के ही सम्पूर्ण पृथ्वी को जल से वर्षा प्रदान कराते हैं। अतः सज्जन पुरुष परोपकार में सदैव प्रयत्नशील रहते हैं। वे कभी भी यह प्रतीक्षा नहीं करते हैं कि कोई प्रार्थना करे उसके पश्चात वह उनकी सहायता करें।

विशेष → (1) इस पद्य में वसन्ततिलका छन्द है।

(2) पद्माकरम् = पद्मानाम् आकरः इति पद्माकरः तम् (तत्पुरुष)

Scanned with CamScanner

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. महाकवि भर्तृहरि की कितनी काव्यरचनाएँ उपलब्ध है—
(अ) दो (ब) चार
(स) तीन (द) पाँच
सही उत्तर—(स)

2. किनको सन्मार्ग पर लाना कठिन होता है—
(अ) सज्जनों को (ब) विद्वानों को
(स) दुर्जनों को (द) आस्तिकों को
सही उत्तर—(स)

3. अपने अतिरिक्त सारे संसार को मूर्ख कौन समझता है—
(अ) बुद्धिमान् (ब) शूरवीर
(स) ज्ञानी (द) अल्पज्ञ
सही उत्तर—(द)

4. विधाता का उद्योग किसमें निष्फल हुआ है—
(अ) मूर्ख की चित्तवृत्ति को सुधारने में
(ब) लगी हुई अग्नि को शमन करने में
(स) सूर्य के आतप को दूर करने में
(द) मतवाले नागेन्द्र को वश में करने में
सही उत्तर—(अ)

5. 'ऐसी उपयोगी विद्या के बिना मनुष्य ..... रहता है' यहाँ रिक्त स्थान में उपयुक्त शब्द है—
(अ) देवता (ब) राक्षस
(स) पक्षी (द) पशु
सही उत्तर—(द)

6. मनुष्य के लिए कौनसा गुण कवच का काम देता है—
(अ) सत्य (ब) लोभ
(स) क्रोध (द) क्षमा
सही उत्तर—(द)

7. 'विष्टप-कष्ट-हारिणि' में 'विष्टप' का क्या अर्थ है—
(अ) विष्णु (ब) संसार
(स) राजा (द) घोड़े का खुर
सही उत्तर—(ब)

8. जीवन की सफलता एवं समृद्धि के लिए क्या परमावश्यक है—
(अ) पराक्रम (ब) भगवत्कृपा
(स) केयूर (द) उदारता
सही उत्तर—(ब)

9. संसार में कितने प्रकार के मनुष्य होते हैं—
(अ) दो (ब) तीन
(स) चार (द) पाँच
सही उत्तर—(ब)

10. 'मनस्वी' शब्द का क्या अर्थ है—
(अ) धनसम्पन्न (ब) पराक्रमी
(स) परोपकारी (द) विचारशील
सही उत्तर—(द)

11. मनस्वी पुरुष की कितनी गतियाँ होती हैं—
(अ) तीन (ब) पाँच
(स) चार (द) दो
सही उत्तर—(द)

Scanned with CamScanner

12. इस संसार में कितने भुवन या लोक हैं—
(अ) दस (ब) बारह
(स) चौदह (द) सोलह
सही उत्तर—(स)

13. ऊर्ध्वलोक कितने हैं—
(अ) तीन (ब) पाँच
(स) सात (द) नौ
सही उत्तर—(स)

14. कौन लोग अपने अपमान को नहीं सहन करते हैं—
(अ) तेजस्वी लोग (ब) निर्धन लोग
(स) परोपकारी लोग (द) रुग्ण लोग
सही उत्तर—(अ)

15. इस संसार में सभी प्राणियों का दमन करने में कौन समर्थ होता है—
(अ) वीर पुरुष (ब) भक्तजन
(स) संन्यासी व्यक्ति (द) गुरुलोग
सही उत्तर—(अ)

16. सन्तोषहीन का जीवन कैसा होता है—
(अ) शान्तिपूर्ण (ब) अशान्तिमय
(स) वैराग्ययुक्त (द) आनन्द से परिपूर्ण
सही उत्तर—(ब)

17. सत्यभाषण से मनुष्य क्या होता है—
(अ) धनसम्पन्न (ब) निर्भीक
(स) लोभी (द) भीरु
सही उत्तर—(ब)

18. वित्त या धन की कितनी गतियाँ होती हैं—
(अ) पाँच (ब) चार
(स) तीन (द) दो
सही उत्तर—(स)

19. वीर और पराक्रमी कौन होते हैं—
(अ) धनी लोग (ब) बुद्धिमान् लोग
(स) उत्साही लोग (द) शहरी लोग
सही उत्तर—(स)

Scanned with CamScanner

(ब) उत्साही लोग (द) शहरी लोग सही उत्तर–(स

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. नीतिशतक के रचयिता का क्या नाम है ?

उत्तर—नीतिशतक के रचयिता का नाम महाकवि 'भर्तृहरि' है।

2. भर्तृहरि क्या राजा थे अथवा योगी ?

उत्तर— जनश्रुतियों के अनुसार भर्तृहरि पूर्व जीवन में राजा थे जो बाद में विरक्त होकर महायोगी बन गए।

3. भर्तृहरि का महाराज विक्रम से क्या कोई सम्बन्ध था ?

उत्तर—हाँ ! भर्तृहरि को मालव प्रदेश के महाराज विक्रम का अग्रज बताया जाता है।

4. भर्तृहरि विरक्त कैसे बने ?

उत्तर—संसार में काम-प्रभाव की विडम्बना के दृश्य ने भर्तृहरि को विरक्त बना दिया।

5. वह सुप्रसिद्ध श्लोक लिखिए जिसमें भर्तृहरि ने सब को धिक्कारा है ?

उत्तर—यां चिन्तयामि सततं मयि सा विरक्ता

⋮

Scanned with CamScanner

साऽप्यन्यमिच्छति जनं स जनोऽन्यसक्तः।
अस्मत्कृते च परितुष्यति काचिदन्या
धिक् तां च तं च मदनं च इमां च मां च॥

6. भर्तृहरि का समय कौनसा माना जाता है ?

उत्तर—भर्तृहरि का समय ईसा की सातवीं शताब्दी का माना जाता है।

7. किस चीनी यात्री ने भर्तृहरि का उल्लेख किया है ?

उत्तर—चीनी यात्री इत्सिंग ने भर्तृहरि का उल्लेख किया है।

8. भर्तृहरि की तीन काव्य रचनाओं के नाम बताइए ?

उत्तर—1. शृंगारशतक, 2. नीतिशतक और 3. वैराग्यशतक।

9. भर्तृहरि ने अपनी प्रथम रचना के रूप में शृंगारशतक क्यों लिखी ?

उत्तर—क्योंकि वे अपनी युवावस्था में विलासप्रिय थे।

10. द्वितीय रचना के रूप में नीतिशतक के लिखने का क्या कारण रहा ?

उत्तर—प्रौढावस्था में बुद्धि के परिपक्व होने पर भर्तृहरि ने नीतिशतक की रचना की।

11. भर्तृहरि की लेखनी से वैराग्यशतक का आविर्भाव कैसे हुआ ?

उत्तर— संसार से विरक्त होने पर कवि की लेखनी से वैराग्यशतक नामक काव्यकृति का आविर्भाव हुआ।

12. शृंगारशतक में किसका वर्णन किया गया है ?

उत्तर— इसमें नारी के रूपसौन्दर्य, विभ्रमविलास तथा विभिन्न ऋतुओं के मादक वातावरण का मनोहर वर्णन किया गया है।

13. वैराग्यशतक में किसका वर्णन है ?

उत्तर— इसमें तृष्णाप्रसार, विषयविकार, मदज्वर तथा भोगासक्ति की परित्याजता बताते हुए जीवन की नश्वरता का वर्णन किया गया है।

14. नीतिशतक में किसका उपदेश दिया गया है ?

उत्तर—इस शतक में लोकव्यवहार के लिए उपयोगी नीति का उपदेश दिया गया है।

15. नीतिशतक के पद्यों में किन दस विषयों का वर्णन प्राप्त होता है ?

उत्तर— 1. मूर्खनिन्दा, 2. विद्याप्रशंसा, 3. स्वाभिमानप्रशंसा, 4. धनमहत्ता, 5. दुर्जननिन्दा, 6. सज्जनप्रशंसा, 7. परोपकारप्रशंसा, 8. धैर्यप्रशंसा, 9. दैवप्रशंसा तथा 10. कर्मप्रशंसा।

16. नीतिशतक का सन्देश क्या है ?

उत्तर— 'विपत्तियों का साहस से सामना करते हुए हमें पुरुषार्थ का अवलम्बन करना चाहिए।'

17. नीतिशतक के मंगलाचरण में किस देव की स्तुति की गई है ?

उत्तर—नीतिशतक के मंगलाचरण में निराकार ब्रह्म की उपासना प्रस्तुत की गई है।

18. सुभाषितों या सूक्तियों का सम्मान कौन लोग करना जानते हैं ?

उत्तर—गुणग्राही लोग सुभाषितों का सम्मान करना जानते हैं।

19. विद्वान् लोग किससे ग्रसित रहते हैं ?

उत्तर—विद्वान् लोग ईर्ष्या से ग्रसित रहते हैं।

20. साधनसम्पन्न धनिकवर्ग किससे मलिन है ?

उत्तर—साधनसम्पन्न धनिकवर्ग घमण्ड से मलिन है।

21. सामान्य जन किससे दबे हुए हैं ?

उत्तर—सामान्यजन अज्ञान से दबे हुए हैं।

Scanned with CamScanner

22. 'अज्ञः सुखमाराध्यः' पद्य से क्या बताया गया है ?
उत्तर—इस पद्य से बताया गया है कि अधूरा ज्ञान कष्टकारक होता है।
23. क्या मूर्ख के चित्त को प्रसन्न किया जा सकता है ?
उत्तर—नहीं ! मूर्ख के चित्त को प्रसन्न करना दुष्कर है।
24. किनको सन्मार्ग पर लाना कठिन होता है ?
उत्तर—दुर्जनों को सन्मार्ग पर लाना कठिन होता है।
25. क्या दुष्ट हाथी को कोमल कमलतन्तु के डोरों से बाँधा जा सकता है ?
उत्तर—दुष्ट हाथी को कमलतन्तुओं से नहीं बाँधा जा सकता है।
26. क्या शहद की बूंद से लवण का समुद्र मीठा हो सकता है ?
उत्तर—नहीं। शहद की बूंद से लवण का समुद्र मीठा नहीं हो सकता।
27. मूर्खों का दोष कैसे छिप जाता है ?
उत्तर—मौन रहने से मूर्खों का दोष छिप जाता है।
28. विद्वानों की सभा में मूर्खों का क्या होता है ?
उत्तर—विद्वानों की सभा में मूर्ख उपहास के पात्र बनते हैं।
29. वास्तविकता का ज्ञान कब होता है ?
उत्तर—विद्वानों के संग से वास्तविकता का ज्ञान होता है।
30. मनुष्यों के मन में मोह कौन उत्पन्न कर देती है ?
उत्तर—अल्पज्ञता मनुष्यों के मन में मोह उत्पन्न कर देती है।
31. कौन अपने समीप विद्यमान तुच्छ वस्तु को भी नहीं छोड़ता ?
उत्तर—स्वार्थपरायण व्यक्ति अपने समीप विद्यमान तुच्छ वस्तु को भी नहीं छोड़ता।
32. बहुत से अनर्थ कैसे होते हैं ?
उत्तर—अविवेक के कारण बहुत से अनर्थ हो जाते हैं।
33. गंगा नदी शिव के मस्तक पर कहाँ से आई ?
उत्तर—गंगा नदी स्वर्ग लोक से शिव के मस्तक पर आई।
34. किसका उपाय नहीं है ?
उत्तर—मूर्ख की मूर्खता को दूर करने का उपाय नहीं है।
35. अग्नि का शमन किससे किया जा सकता है ?
उत्तर—अग्नि का शमन जल से किया जा सकता है।
36. सूर्य की धूप किससे रोकी जा सकती है ?
उत्तर—सूर्य की धूप छाते से (छत्रेण) रोकी जा सकती है।
37. गजराज को किससे वश में किया जा सकता है ?
उत्तर—गजराज को तीखे अंकुश से वश में किया जाता है।
38. डंडे से किसे ठीक किया जा सकता है ?
उत्तर—डंडे से गाय और गधों को ठीक किया जा सकता है।
39. व्याधि अर्थात् रोग कैसे ठीक होता है ?
उत्तर—व्याधि अर्थात् रोग दवाओं से ठीक होता है।

Scanned with CamScanner

40. बिना सींग एवं पूँछ का साक्षात् पशु कौन है ?

उत्तर— साहित्य, संगीत और कला से अपरिचित व्यक्ति बिना सींग एवं पूँछ का साक्षात् पशु है।

41. पशुओं की तुलना में मनुष्यों में क्या अधिक होता है ?

उत्तर— मनुष्यों में ज्ञान और विवेक अर्थात् धर्म या कर्त्तव्य अधिक होता है।

42. कौन मनुष्य कहलाने का अधिकारी नहीं है ?

उत्तर— अज्ञानी या विद्याविहीन मनुष्य कहलाने का अधिकारी नहीं है।

43. दुर्बुद्धिवाले मानवों की दो विशेषताएँ बताइए ?

उत्तर— 1. उनसे सदा अनिष्ट की आशंका रहती है और 2. वे कभी भी भलाई नहीं कर सकते हैं।

44. किनका सहवास देवराज इन्द्र के महलों में भी अच्छा नहीं।

उत्तर— मूर्ख लोगों का सहवास देवराज इन्द्र के महलों में भी अच्छा नहीं।

45. मूर्ख व्यक्ति और किन-किन नामों से पुकारा जाता है ?

उत्तर— 'मूर्ख' को अज्ञ, ज्ञानहीन, अविवेकी, विद्याविहीन भी कहते हैं।

46. राजा की जड़ता की सूचक कौनसी बात है ?

उत्तर— किसी अच्छे कवि का अनादर करना उस राजा की जड़ता का सूचक है।

47. कौनसे बुरे पारखी निन्दनीय होते हैं ?

उत्तर— वे निन्दनीय होते हैं जिनके द्वारा बहुमूल्य 'रत्न' मूल्य से गिरा दिए गए हों।

48. विद्या रूपी धन की विलक्षणता क्या है ?

उत्तर— यह धन चोरी नहीं होता और व्यय करने पर भी बढ़ता है।

49. राजा तथा विद्वान् में बड़ा कौन है ?

उत्तर— राजा तथा विद्वान् में 'विद्वान्' बड़ा है।

50. हंस के नीर क्षीर विवेक का चुम्बक से उदाहरण कैसे घटित होता है ?

उत्तर— हंस द्वारा जलमिश्रित दुग्ध में से दूध-दूध को पी जाने का और पानी-पानी को छोड़ देने का कार्य ठीक उसी प्रकार का है जैसे कि चुम्बक अन्य कई प्रकार के मिश्रण में से लोहे को अपनी ओर आकर्षित कर लेता है।

Scanned with CamScanner

दृष्टियों से इनके शतक काव्य अत्यन्त रोचक एवं सुन्दर हैं। महाकवि भर्तृहरि की यह विशेषता है कि उनकी भाषा स्वाभाविक और भावग्राही है। उन्होंने भावानुरूप भाषा का प्रयोग किया है। उन्होंने कोरी शाब्दी क्रीड़ा न करके उनकी सहज अभिव्यक्ति पर ध्यान दिया है। वाक्य योजना इतनी सरल है कि उन्हें पढ़ते ही श्लोकों का कथ्य सहज रूप में व्यक्त हो जाता है। इनके पद्यों में प्राय: दीर्घ समास का अभाव है। इनके शतक माधुर्य एवं प्रसाद गुण से ओत-प्रोत हैं। प्रसाद गुण के कारण उनकी भाषा अत्यन्त सरल, सरस, स्वाभाविक एवं प्रसंगोचित है। स्थान-स्थान पर लोकोक्तियों एवं सूक्तियों का समावेश सहृदय पाठक के हृदय को चमत्कृत कर देता है। यथा-

वने रणे शत्रु जलाग्नि मध्ये महार्णवे पर्वत मस्तके वा।
सुप्तं प्रसुप्तं विषमास्थितं वा रक्षन्ति पुण्यानि पुराकृतानि ॥

अथवा

विद्या नाम नरस्य रूपमधिकं, प्रच्छन्न गुप्तंधनम्,
विद्या भोग करी यश: सुखकरी विद्यागुरूणां गुरु:।
विद्या बन्धु जनो विदेश गमने विद्या परा देवता,
विद्या राजसु पूज्यते नतु धनं विद्या विहीन: पशु: ॥

भर्तृहरि ने अपने कथ्य को आकर्षक बनाने के लिए माधुर्य गुण एवं वैदर्भी रीति का प्रयोग किया है इस कारण उनके पद्यों में माधुर्य व्यंजक वर्णों एवं स्वल्प समस्त पदों का अधिकतम प्रयोग हुआ है-

येषां न विद्या न तपो न दानं,
ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्म:।
ते मर्त्यलोके भुविभार भूता,
मनुष्य रूपेण मृगाश्चरन्ति ॥

भर्तृहरि के मुक्तकों में प्रसंगानुरूप यत्र-तत्र गौड़ी रीति का भी प्रयोग हुआ है, जिससे भावों में ओजस्विता एवं पद-विन्यास में समस्तता स्वत: आ गई है-क्षुत्क्षामोऽपि जराकृशोऽपि शिथिल प्राणोऽपि कष्टांदशा-

मापन्नोऽपि विपन्नदीधितिरपि प्राणेषु नश्यत्स्वपि।

अलंकार योजना-भर्तृहरि के मुक्तकों में अलंकारों का स्वाभाविक प्रयोग हुआ है। उनमें अनुप्रास, उपमा, उत्प्रेक्षा, रूपक, दीपक, दृष्टान्त, समुच्चय, परिसंख्य, अर्थापत्ति, अप्रस्तुत प्रशंसा, स्वभावोक्ति, अतिशयोक्ति तथा अर्थान्तरन्यास अलंकारों का बाहुल्य है। इन अलंकारों का उन्होंने यथोचित सन्निवेश किया है, निम्न श्लोक उपमा अलंकार का सुन्दर उदाहरण है-

सत्याऽनृता च परुषा प्रियवादिनी च
हिंस्रा दयालुरपि चार्थपरा वदान्या।
नित्यव्यया प्रचुर नित्य धनागमा च,
वाराङ्गनेव नृपनीतिरनेकरूपा ॥

सूक्त एवं दृष्टान्त कथनों का अधिक प्रयोग होने के कारण नीतिशतक में अर्थान्तरन्यास अलंकार का प्रयोग अधिक हुआ है-

शिर: शार्वं स्वर्गात् पशुपति शिरस्त: क्षितिधरं,
महीध्रादुत्तुङ्गा दवनिमवनेश्चापि जलधिम्।
अधोऽधो गङ्गेयं पदमुपगतास्तोकमथवा,
विवेक भ्रष्टानाम् भवति विनिपात: शतमुख: ॥

Scanned with CamScanner

निबन्धात्मक प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. भर्तृहरेः भाषा-शैल्याम् तथा नीतिशतकस्य काव्यसौष्ठवे संक्षेपेण लेखः लिखत।

(भर्तृहरि की भाषा-शैली तथा नीतिशतक के काव्य सौष्ठव पर संक्षिप्त लेख लिखो।)

उत्तर—भाषा-शैली—काव्य कला की दृष्टि से भर्तृहरि के शतक प्रशस्यतम है। शैली की रोचकता एवं तार्किकता, भावों की उदारता, शब्द-विन्यास, उक्ति वैचित्र्य का कौशल आदि सभी

Scanned with CamScanner

भर्तृहरि ने पर्यायोक्त अलंकार का चमत्कारी प्रयोग किया है और उसके प्रयोग से ऐसे अर्थ की व्यंजना की है जो उपदेशात्मकता की दृष्टि से प्रशस्य है-

वरं पक्षच्छेद: समदमघवन्मुक्तकुलिश,
प्रहारैरुद्गच्छद्बहलदहनोद्गार गुरुभि:।
तुषाराद्रे: सूनोरहह पितरि क्लेश विवशे,
न चासौ सम्पात: पयसि पयसां पत्युरुचित: ॥

इसमें मैनाक पर्वत के समुद्र में जाकर छिपने की घटना को आधार बनाकर ऐसे व्यक्ति पर व्यंग्य किया गया है जो विपत्ति के समय अपने गुरुजनों को छोड़कर अपनी रक्षा करने में ही लग जाता है। इसी प्रकार अन्य अलंकारों का भी यथोचित् प्रयोग नीतिशतक में देखा जा सकता है।

छन्दोविधान–भर्तृहरि के सभी मुक्तकों में छन्दों विधान अत्यधिक कलापूर्ण है। उन्होंने विषय और प्रसंग के अनुकूल छन्दों का चयन बड़े कौशल से किया है, और उनमें गति, यति आदि का पूरा ध्यान रखा है। नीतिशतक में शार्दूल विक्रीड़ित छन्द का सर्वाधिक प्रयोग हुआ है तत्पश्चात् वसन्ततिलका छन्द का प्रयोग हुआ है। नीतिशतक में कुल चौदह छन्दों का प्रयोग हुआ है–अनुष्टुप्, आर्या, पृथ्वी, उपजाति, शिखरिणी, हरिणी, शालिनी, मालिनी, वंशस्थ, द्रुत विलम्बित, स्रग्धरा, मन्दाक्रान्ता, वसन्ततिलका और शार्दूल विक्रीड़ित। छन्द चयन में गेयता का पूर्ण ध्यान रखा गया है जो कि गीतिकाव्य का मूल तत्त्व है–

वाञ्छा सज्जन संगमे परगुणेप्रीतिर्गुरौनम्रता,
विद्याया व्यसनं स्वयोषिति रतिर्लोकापवादाद् भयम्।
भक्ति: शूलिनि शक्तिरात्मदमने संसर्ग मुक्ति: खले,
येष्वेते निवसन्ति निर्मल गुणास्तेभ्यो नरेभ्यो नम: ॥

रस योजना–भर्तृहरि के शृंगार शतक में शृंगार रस और वैराग्यशतक में शान्त रस का प्राधान्य है, परन्तु नीतिशतक का प्रत्येक मुक्तक रस योजना की दृष्टि से स्वतंत्र है। इसमें रस भाव एवं वस्तु ध्वनि का अच्छा समावेश हुआ है। दयावीर, दानवीर, धर्मवीर, भावों की अधिकता इसमें दिखाई देती है। कुछ प्रसंगों में वीभत्स, अद्भुत तथा शान्त रस एवं भावोदय आदि का अच्छा परिपाक हुआ है। मुक्तकों में पूर्वापर प्रसंग-सम्बन्ध न होने पर भी भावों का सद्य: उद्रेक होना भर्तृहरि की काव्यकला का एक उत्कृष्ट निदर्शन है।

वस्तुत: भर्तृहरि शतक भावपक्ष एवं कलापक्ष दोनों दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण है, फिर भी इनमें कला पक्ष की अपेक्षा भाव की ही प्रबलता है, क्योंकि भर्तृहरि का मुख्य प्रयोजन मानव जीवन के विविध पक्षों पर ऐसा प्रभाव डालना था, जिससे समाज सन्मार्ग की ओर बढ़ सके।

डॉ. रामजी उपाध्याय का कथन है–

"भर्तृहरि की शैली में तार्किकता है। उनमें वह कला है, जिससे वे अपने वक्तव्य को प्रभविष्णु बना सके हैं। उन्होंने कोरी रस निष्पत्ति के लिए लेखनी नहीं चलाई है, अपितु पाठक की जीवन दिशा में मोड़ ला देने के लिए काव्य रचना की है। यही कारण है कि राजा के प्रासाद से लेकर रंक की कुटिया तक में इनकी वाणी चर्चित हुई है और अधिकाधिक कवियों और समाजसेवकों को उन्होंने अपनी दृष्टि से लोक की समस्याओं को देखने की योग्यता और प्रवृत्ति प्रदान की है। भर्तृहरि की रचनाएँ अपने रसात्मक माधुर्य और संगीत से हृदय का आवर्जन करती है और अपने ठोस प्रस्तावों से बुद्धि ग्रहण करती है। कहीं-कहीं भर्तृहरि पाठक से मानो बात करते हुए विशेष प्रभावशाली लगते हैं।"

Scanned with CamScanner

प्रश्न 2. नीतिशतकानुसारेण रससिद्धकवेः वैशिष्ट्यं वर्णयत।

(नीतिशतकम् के अनुसार रससिद्ध कवि की विशेषताएँ बताइये।)

उत्तर–रससिद्ध कवि की विशेषताएँ–महाकवि भर्तृहरि ने नीतिशतकम् में अन्य महत्त्वपूर्ण तथ्यों के साथ-साथ रससिद्ध कवीश्वरों के महत्त्व पर भी प्रकाश डाला है। इस सन्दर्भ में निम्नलिखित श्लोक उल्लेखनीय है–

'जयन्ति ते सुकृतिनो रससिद्धा कवीश्वराः ॥
नास्ति येषां यशः काये जरामरणजं भयं ॥'

प्रस्तुत श्लोक के अनुसार जो रससिद्ध कवि हैं, उनका शाश्वत महत्त्व रहता है। ऐसे कवीश्वरों का पाञ्च भौतिक शरीर भले ही नष्ट हो जाए, पर उनका कीर्ति रूपी शरीर सदैव स्थायी रहता है। उनके यशः शरीर को न कभी मृत्यु का ही भय होता है और न बुढ़ापे का। उदाहरणार्थ– वाल्मीकि, कालिदास आदि रससिद्ध कवि यद्यपि आज नहीं है उनका पाञ्चभौतिक शरीर वृद्ध होकर नष्ट हो चुका है, परन्तु उन्होंने जो अपनी रचनाओं द्वारा यश अर्जित किया है, वह आज भी वर्तमान है। इस प्रकार मृत्यु के उपरान्त भी रससिद्ध कवि अपने यश शरीर से सदैव अमर रहते हैं।

प्रश्न 3. नीतिशतकाधारेण सज्जनस्वरूपं वर्णयन्तु।

अथवा

नीतिशतकानुसारेण महात्मनां धीराणां वा प्रकृतेः वर्णनं कुरुत।

(नीतिशतकम् के अनुसार महात्माओं अथवा धीर पुरुषों की प्रकृति का वर्णन कीजिए।)

उत्तर–कविवर भर्तृहरि ने नीतिशतकम् में विविध पद्धतियों का वर्णन किया है। उन्होंने महात्माओं एवं धीर पुरुषों के स्वभाव का भी चित्रण किया है, जिसे इस प्रकार व्यक्त किया जा सकता है।

महात्माओं की प्रकृति–महान् पुरुषों के स्वभाव का चित्रण सुजन पद्धति के अन्तर्गत किया गया है। कवि ने सर्वप्रथम महापुरुषों को नमस्कार किया है; उन महापुरुषों को जिनकी सज्जनों की संगति में अभिलाषा, दूसरों के गुणों पर प्रेम, गुरु के विषय में नम्र व्यवहार, विद्या में रुचि, अपनी पत्नी पर अनुराग, लोक निन्दा से भय, भगवान शिव पर भक्ति, आत्म-संयम में सामर्थ्य, दुर्जनों से संसर्ग से दूर रहना इत्यादि गुण जिसमें रहते हैं।

इसी क्रम में कवि ने महात्माओं के स्वभाव सिद्ध गुणों का वर्णन किया है।

"विपदि धैर्यमथाभ्युदये क्षमा
सदसि वाक्पटुता युधि विक्रमः।
यशसि चाभिरुचि र्व्यसनं श्रुतौ
प्रकृतिसिद्धमिदं हि महात्मनाम् ॥"

अर्थात् विपत्ति काल में धैर्य, सम्पत्ति काल में सहिष्णुता, सभा में वाक्मिता, युद्ध में पराक्रम, कीर्ति संग्रह में रुचि, विद्याभ्यास में आसक्ति महात्माओं में ये सब गुण स्वभाव सिद्ध होते हैं।

महापुरुषों के अलंकरण प्रसिद्ध अलंकारों से विलक्षण होते हैं। हाथ में उनके प्रसन्नता दान होता है, शिर पर गुरुचरणों का अभिवादन, मुख में सत्यवाणी, भुजाओं में विजयश्री निरुपम बल, हृदय में निष्कलंक व्यापार तथा कानों में अधीन शास्त्र ही मण्डन होता है। इस सम्पत्ति के बिना भी स्वभाव से ही सौजन्य सम्पन्न लोगों के लिए यह सब पूर्वोक्त दान आदि अलंकार होता है।

Scanned with CamScanner